

अंग्रेजी साम्राज्यवाद के प्रति क्रांतिकारी यतीन्द्रनाथ दास के वैचारिक दृष्टिकोण का एक अध्ययन

शोध सार

डा. प्रवीन कुमार

व्याख्याता इतिहास,
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय,
हरियाणा

डा. राघवेन्द्र यादव,

सहायक आचार्य, इतिहास विभाग,
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
धर्मशाला

Paper Received date

05/08/2026

Publishing Date

10/08/2026

DOI

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22663819>

**IMPACT
FACTOR
5.924**

भारतीय इतिहास के सन्दर्भ में साम्राज्यवाद दमन और शोषणकारी व्यवस्था का प्रतीक ही माना जाता रहा है। क्योंकि इसके जरिये अंग्रेजों ने भारत एवं भारतीय जनता पर मनमाने अत्याचार किये थे जिसके परिणामस्वरूप क्रांतिकारी आन्दोलन का उदय हुआ था। जो साम्राज्यवादी व्यवस्था और सोच का जड़ से सफाया करने के लिए स्वतंत्रता संघर्ष में उतरे थे। जिनमें भगत सिंह के साथ यतीन्द्र दास की भी मुख्य भूमिका रही थी। इन्होंने अन्य क्रांतिकारी साथियों के साथ मिलकर इन्कलाब जिंदाबाद और साम्राज्यवाद का नाश हो के नारों के द्वारा भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को वैचारिक आधार प्रदान किया था। जिसके चलते भारत में राष्ट्रवाद की एक सशक्त लहर पैदा हुई जिसके कारण भारत ने स्वतंत्रता का सूरज देखा था।

संकेत शब्द – इन्कलाब जिंदाबाद, यतीन्द्र दास, जलियांवाला नरसंहार, दी रिवोल्यूशनरी।

प्रस्तावना

साम्राज्यवाद का उदय मोटे तौर पर पूंजीवादी प्रणाली के एक रूप के तौर पर जाना जाता है। जिसको आधार बनाकर अनेक देशों को गुलाम बनाकर शोषण करना आरंभ किया गया। लेकिन 1870 के बाद साम्राज्यवाद का एक नया स्वरूप उभरकर सामने आया जिसके तहत गुलाम बनाए गए देशों से आर्थिक लाभ कमाने के साथ-साथ विदेशी जनसंख्या को बसाना भी आरंभ किया गया था।

यदि हम साम्राज्यवाद की परिभाषा की बात करें तो अनेक विद्वानों ने अपने-अपने तरीके से इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है। हाब्सन ने 1902 में प्रकाशित अपनी पुस्तक *साम्राज्यवाद एक अध्ययन* पूंजीपति वर्ग के वित्तीय हितों को साम्राज्यवादी इंजन के नियंत्रक की संज्ञा दी है।

रूसी क्रांति ने समूचे विश्व की साम्राज्यवादी व्यवस्था को करारा झटका दिया था। इसे मनुष्य द्वारा मनुष्य के एवं राष्ट्र द्वारा राष्ट्र के शोषण को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। विश्वव्यापी साम्राज्यवाद का भाग होने के कारण भारत में भी इस क्रान्ति का व्यापक प्रभाव दिखाई दिया था। जिसके चलते भारत में क्रान्तिकारी वर्ग उभरा जिसने भारत में अंग्रेजी साम्राज्यवाद को सीधी चुनौती देने की हिम्मत की थी क्योंकि भारत का क्रान्तिकारी आन्दोलन एक सुविचारित आन्दोलन था।²

यदि हम अंग्रेजी सरकार की भारत के प्रति साम्राज्यवादी नीतियों पर दृष्टिपात करें तो पाते हैं कि अंग्रेज कम्पनी आरंभ से ही भारत के आर्थिक, सामाजिक, और राजनीतिक शोषण के लिए प्रयासरत थीं जिसके तहत 1834 में अंग्रेजों के भारत में आने, रहने और स्थाई निवास हेतु सारे प्रतिबन्ध हटा दिए गए थे। इसी दौरान विदेशी सरकार ने सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सुधारों के नाम पर अपना शिकंजा कसना शुरू किया जिसके कारण 1857 की महान क्रान्ति से भारतीयों ने अपना प्रबल विरोध दिखाया था।

यहाँ बताना आवश्यक है कि 1857 की क्रान्ति के पश्चात ही भारतीयों के दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन आना आरंभ हुआ था। इंग्लैण्ड की सरकार का असली चरित्र व चेहरा जनता के समक्ष प्रस्तुत हुआ था। भारत की इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप ही भारतीय जनमानस का ध्यान अंग्रेजी सरकार की विभेदकारी नीतियों पर सहसा ही चला गया था। क्योंकि यदि हम उदाहरण स्वरूप देखें तो झांसी की रानी के राज्य का विलय, अवध का विलय, पंजाब का विलय आदि से जनता अंग्रेजी शासन के खिलाफ होती चली गई।

विदेशी शासन की समाप्ति हेतु भारतीयों ने क्रान्ति का सहारा लिया था जिसके मद्देनजर क्रान्तिकारी आन्दोलन आरंभ हुए थे जो हिंसा के जरिये सरकार, शासन व समाज तीनों में परिवर्तन लाना चाहते थे।

क्रान्तिकारियों ने बड़ी संख्या में भारतीय जनता का दृष्टिकोण परिवर्तन करने में सहायता की थी। इसके अतिरिक्त यह आन्दोलन राष्ट्रीय भावना की मूल धारा से भी लगातार जुड़ा रहा था। ऐसे बहुत से अवसर भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान नजर आते हैं। जब अन्य प्रमुख राजनीतिक संगठनों का जोश ठण्डा पड़ चुका था लेकिन क्रान्तिकारी आन्दोलन की ज्वाला जलती रही थी।³

क्रान्तिकारी आन्दोलन के समय दो विचार उनके दृष्टिकोण में नजर आते हैं। कुछ नेता अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र आन्दोलन करने के लिए भारतीय सेना की और यदि संभव हो तो विदेशी शक्तियों

की भी सहायता द्वारा भारतीय स्वतंत्रता का मार्ग बनाने की मुहिम चलाना चाहते थे। इसी दौरान अन्य दृष्टिकोण के क्रान्तिकारी देश में हिंसात्मक कार्यक्रम, जैसे अंग्रेज अफसरों, पुलिस और क्रान्तिकारी साथियों की सूचना देने वाले लोगों को कत्ल करने की नीति में विश्वास रखते थे। यह दृष्टिकोण पंजाब, उत्तर प्रदेश, बंगाल व महाराष्ट्र में दिखाई देता है। इन क्रान्तिकारी नेताओं ने फ्रांसिसी क्रान्ति, इटली के पुनर्जागरण, अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम से प्रेरणा प्राप्त की थी।⁴

पहले चरण के अधिकतर क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी थे। जिनके विचारों पर में धार्मिक तत्व नजर आते हैं इसके अतिरिक्त बंगाल में रहस्यवाद की झलक मिलती है जैसे शक्ति पूजा, गणेश पूजा जो लोगों के दृष्टिकोण में बदलाव लाने के लिए चलाई गई थी। बंगाल को क्रान्तिकारी आन्दोलन की कर्मभूमि माना जाता है क्योंकि बंगाली क्रान्तिकारी नवयुवकों ने अंग्रेजी शासन का डर भारतीय जनता के मन से निकाल बाहर किया था। इससे पूर्व एक समय यह था कि अंग्रेजी सरकार का छोटा सा नुमाइन्दा भी भारतीय जनता में खौफ पैदा कर सकता था। लेकिन क्रान्तिकारियों के निर्भीक दृष्टिकोण के चलते भारतीय लोगों में एक बड़ा मनोवैज्ञानिक बदलाव नज़र आता है। अंग्रेजी सरकार ने साम्राज्यवादी सोच के चलते भारतीय लोगों में राष्ट्रवादी भावना की समाप्ति करने के लिए 1905 में बंगाल का विभाजन किया था जिसके चलते सम्पूर्ण भारत में स्वदेशी आन्दोलन के साथ-साथ बंग-भंग विरोधी आन्दोलन आरंभ हो गए। अरविन्दो घोष ने इस घटना को एक अवसर के रूप में देखा जो भारतीयों को नीन्द से जगाने का कार्य कर सकता था।⁵ उनका मत था यदि हम यहीं तरीका साम्राज्यवादी व्यवस्था के खिलाफ अपनाये तो उसे आसानी से समाप्त किया जा सकता है।

इसी संघर्ष के दौरान बंगाल में यतीन्द्र नाथ का जन्म हुआ जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष की दशा व दिशा बदल दी। क्रान्तिकारी यतीन्द्र दास जैसे-जैसे बड़े होते चले गए ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों से अवगत होते चले गए थे। इन पर भारतीय क्रान्तिकारियों के साथ-साथ बंगाली क्रान्तिकारियों का भी मुख्य प्रभाव था जिनमें विष्णु पिंगले, जतिन मुखर्जी तथा सचिन्द्रनाथ सान्याल का मुख्य योगदान है। जतिन दास को इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणादायक शिक्षा पिता बंकिम बिहारी से भी मिलती रहती थी जिसके फलस्वरूप उनका दृष्टिकोण ब्रिटिश सरकार के विरोध में होता चला गया।⁶

गौर करने की बात यह है कि यतीन्द्र दास ने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को नई दिशा व दशा प्रदान करने में अपनी बहुआयामी भूमिका अदा की थी। क्रान्तिकारी यतीन्द्र दास का अंग्रेजी सरकार के प्रति दृष्टिकोण को लेकर काफी दृढ़ व स्पष्ट थे। क्योंकि वे सरकार की शोषणकारी नीतियों से भली भांति अवगत हो चुके थे और उनके कार्यों को अमानवीय करार देते थे। यतीन्द्र दास का प्रबल विश्वास था कि ब्रिटिश साम्राज्य भारतीयों को किसी भी कीमत पर स्वतंत्रता और अधिकार नहीं

देना चाहता। लिहाजा भारतीयों को क्रान्ति के माध्यम से ही भारत माता की मुक्ति का मार्ग बनाना पड़ेगा। विदेशी शासन के प्रति यतीन्द्र दास का दृष्टिकोण को निम्न बिन्दुओं द्वारा बखूबी समझा जा सकता है।

जलियांवाला नरसंहार से निराशा

क्रान्तिकारी यतीन्द्र दास का प्रबल मत था कि सरकार भारतीयों के अधिकारों को समाप्त करना चाहती है। साथ ही स्वतंत्रता से जीने भी नहीं देना चाहती। इसीलिए जतिन दास ने ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों का संचालन करना आरंभ किया था। यहां बताना जरूरी है कि बचपन से क्रान्तिकारी के पथ की ओर अग्रसर होने के गुण जतिन समाहित हो चुके थे। स्कूल के दिनों एक घटना का वर्णन करना आवश्यक है कि जतिन के स्वतंत्र व्यवहार के चलते अध्यापक उन्हें स्कूल से निकालना चाह रहे थे। लेकिन जतिन ने इस बात की भी प्रवाह किए बिना अपना स्वच्छन्द व्यवहार जारी रखा। इसके पश्चात उनके पिता के कारण मामला शान्त करवाया गया था।⁷

जतिन दास के मन में यह बात बैठ गई कि उनका स्वतंत्र व्यवहार अध्यापक को पसन्द नहीं आया। इसी दौरान ब्रिटिश सरकार ने जलियांवाला बाग में निहत्थी भीड़ पर गोलियां चलवाई जिसमें 379 लोगों के मारे जाने की बात सरकार ने की।⁸ लेकिन वास्तविकता कुछ अलग ही थी। यह घटना समस्त देश के साथ क्रान्तिकारी यतीन्द्र दास के दृष्टिकोण में व्यापक बदलाव लाने में कारगर रही थी। उनका कड़ा मत था कि यदि अंग्रेजी सरकार को जल्द ही भारत से बाहर नहीं निकाला गया तो ऐसे नरसंहार होते रहेंगे। इस मत की पुष्टि इस बात से होती है कि यदि वे किसी बात को एक बार सत्य मान लेते थे तो आसानी से उनके विचार एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन नहीं किया जा सकता था।⁹ जलियांवाला बाग में जो नरसंहार हुआ था वह ब्रिटिश साम्राज्यवादी अत्याचारों की चरमसीमा थी

असहयोग आन्दोलन से परिवर्तित दृष्टिकोण

जैसाकि सर्वविदित है कि जलियांवाला हत्याकाण्ड के प्रबल विरोध स्वरूप गांधी जी ने एक देशव्यापी आन्दोलन चलाया जिसके आरंभ करने के दौरान बताया गया था कि एक वर्ष के भीतर ही स्वतंत्रता की प्राप्ति कर ली जाएगी। इसके अतिरिक्त असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रमों में सरकारी स्कूलों, कालेजों के साथ-साथ उपाधियों का त्याग करना भी शामिल था। इसी दौरान विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार भी चरमसीमा तक किया गया था।¹⁰

इस विरोध प्रदर्शन में सी.आर. दास, नेहरू आदि ने अपनी वकालत छोड़ दी थी। इन्हीं बातों का अनुशरण करते हुए भगत सिंह, भगवती वोहरा, यशपाल के साथ यतीन्द्र दास ने भी स्कूलों व कालेजों का बहिष्कार किया था।¹¹ उन्होंने असहयोग आन्दोलन में शामिल होना इसलिए स्वीकार किया था। क्योंकि गांधी जी ने एक वर्ष में स्वराज्य प्राप्ति की बात रखी थी। लेकिन चोरी-चोरा

घटना के पश्चात देशव्यापी आन्दोलन समाप्त करके देश के साथ धोखा किया गया था। इस घटना के पश्चात यतीन्द्र दास का कांग्रेस से मोह भंग हो गया। जिसके परिणामस्वरूप उनके दृष्टिकोण में एक व्यापक परिवर्तन दिखाई देता है। उनको दृढ़ विश्वास हो गया था कि भारत की स्वतंत्रता के लिए किसी अन्य मार्ग की तलाश जल्द से जल्द करनी होगी। क्योंकि गांधी जी अपने वायदा को पूर्ण करने में असफल रहे थे। इसी दौरान आत्मशक्ति, सारथी और बिजली जैसी सरकार विरोधी पत्रिकाएं पुनः छपनी आरंभ हुई जिसने क्रान्तिकारी आन्दोलन का मार्ग प्रशस्त किया था।¹²

संगठन में सक्रियता

असहयोग आन्दोलन की समाप्ति के पश्चात क्रान्तिकारियों ने एक नए मार्ग की तलाश हेतु गुप्त क्रान्तिकारी संस्थाओं को एक करने की बात की ताकि एक अखिल भारतीय संगठन बनाकर ब्रिटिश हुकूमत के साथ लौहा लिया जा सके। इसी दौरान क्रान्तिकारी सचिन्द्रनाथ सान्याल के साथ ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में यतीन्द्र दास भी सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातान्त्रिक दल की स्थापना में क्रान्तिकारी यतीन्द्र दास का महत्वपूर्ण योगदान रहा था। इसके अतिरिक्त उन्होंने नवयुवकों को राष्ट्रवादी भावना से प्रेरित करने के लिए दक्षिण कलकत्ता तरुण समीति और दक्षिण कलकत्ता सेवाश्रम की स्थापना की थी जिसके परिणामस्वरूप यतीन्द्र दास क्रान्तिकारी आन्दोलन के केन्द्र बिन्दु बन गए थे।¹³

इसके अतिरिक्त दी रिवोल्यूशनरी जो हिन्दुस्तान रिपब्लिकन संघ का घोषणा-पत्र था। जो सम्पूर्ण भारत में 31 दिसम्बर, 1924 से 1 जनवरी, 1925 के बीच की रात वितरित किया गया था जिसको बांटने की जिम्मेदारी क्रान्तिकारी यतीन्द्र दास के कंधों पर थी।¹⁴ यहाँ गौर करने की बात यह है कि इस क्रान्तिकारी लेख में उनके दृष्टिकोण को बखूबी समझा जा सकता है जो उन्होंने ब्रिटिश सरकार के प्रति अपनाया हुआ था। इसी में भावी रणनीतियों का भी वर्णन किया गया था। इसका कुछ अंश इस प्रकार है -

भारत की क्रान्तिकारी पार्टी का मुख-पत्र

1 जनवरी, 1925 वोल्यूम एक

(हर ईमानदार भारतवासी को चाहिए कि वह इसे आदि से अन्त तक पढ़े और अपने मित्रों को भी पढ़ाएं) "नई रोशनी के जन्म के लिए उथल-पुथल आवश्यक है।"

नई जिन्दगी का शुभारंभ वेदना एवं कष्ट से होता है। भारत का भी नया जन्म हो रहा है। वह उथल-पुथल और वेदना की आवश्यक मंजिलों से होकर गुजर रहा है। भारत के युवाओं में प्रवाहित रक्त एक आन्दोलन का रूप धारण कर रही है। यह उल्लेखनीय आन्दोलन युवा भारत का क्रान्तिकारी आन्दोलन है। इसने कमजोर लोगों में भी हिम्मत पस्त भर दी है। जिस प्रकार बसन्त को कभी रोका नहीं जा सकता उसी प्रकार क्रान्तिकारी आन्दोलन को भी रोका नहीं जा सकता।¹⁵

क्रान्तिकारी आन्दोलन के आदर्श एवं विचार कभी तलवार द्वारा कुचले नहीं जा सकते। यह क्रान्तिकारी आन्दोलन देश में उत्पन्न नवजीवन का प्रतिफल है। इसकी भर्त्सना अपनी चेतना की भर्त्सना है। यह आन्दोलन वर्तमान सरकार से कहीं अधिक बलवान है। इस दमनकारी विदेशी शासन को समाप्त किया ही जाना चाहिए। इसलिए क्रान्तिकारी दल ने स्वयं तलवार उठाने का निर्णय लिया है। क्रान्तिकारी दल की तलवार विचारों को साथ लेकर चलती है। राजनीति के क्षेत्र में क्रान्तिकारी दल का तत्कालिक उद्देश्य संगठित सशस्त्र क्रान्ति द्वारा भारत के संयुक्त राज्यों को एक संघीय गणराज्य में स्थापित करना है। जिसमें शोषण पर आधारित समस्त व्यवस्थाओं के लिए कोई स्थान नहीं होगा।

क्रान्तिकारी दल की अपनी नीतियां एवं कार्यक्रम हैं जिनको उजागर नहीं किया जा सकता। यह कहना मात्र एक स्वांग है कि भारत की मुक्ति संवैधानिक माध्यमों से हो सकती है। विशेषकर जब कोई संविधान ही न हो। हमारे समक्ष संगठित रूप से मानवता (भारत की जनता) की सेवा करने का अवसर है लेकिन इसकी प्राप्ति तब तक नहीं हो सकती जब तक वह ब्रिटिश भारत कहलाता है। भारत को अपने आदर्शों की पूर्ति एक अलग एवं स्वतंत्र अस्तित्व बनाना होगा। एक बच्चा भी जानता है कि ब्रिटिश भारत में जिन कानूनों से शासन होता है वे उन्हीं द्वारा निर्मित हैं। क्रान्तिकारी नवयुवकों की निंदा करना बहुत आसान हो जाता है। लेकिन भारत के क्रान्तिकारी न ही आतंकवादी हैं, न ही अराजकतावादी। आतंक फैलाना उनका उद्देश्य नहीं है। लेकिन वर्तमान सरकार केवल आतंक फैलाकर ही भारत में अपनी जड़ें जमाए हुए हैं। इसीलिए सरकारी आतंक का मुकाबला जवाबी कार्रवाई यानि (ईंट का जवाब) पत्थर से दिया जाना चाहिए।¹⁶

टैरेंस मैक्स्वनी का प्रभाव

ब्रिटिश साम्राज्य में यह कहावत मशहूर थी कि *इसका सूर्य कभी अस्त नहीं होता था*। इसीलिए गोरों की साम्राज्यवादी सोच का भुगतान आयरलैंड भी कर रहा था लिहाजा यतीन्द्र दास का दृष्टिकोण आयरलैंड के स्वतंत्रता संघर्ष से भी काफी प्रभावित नजर आता है। क्रान्तिकारी जतिन दास आयरलैंड के स्वतंत्रता सेनानी टैरेंस मैक्स्वनी से बेहद प्रभावित थे। टैरेंस आयरिश स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान कार्कफिन के मेयर थे। जिनको इंग्लैंड सरकार ने राजद्रोह में गिरफ्तार कर लिया था। जिनको क्रिस्टन जेल में 74वें दिन भूख हड़ताल के दौरान बलिदान से अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिली थी।¹⁷

यतीन्द्र दास के रवैये में इस घटना से काफी बदलाव आया था। क्योंकि दोनों देशों पर सांझा दुश्मन शासन चला रहा था। दूसरी बात दोनों (यतीन्द्र दास व टैरेंस) अपने-अपने देश की स्वतंत्रता हेतु संघर्षरत थे। क्योंकि उनका विचार था भारत को जल्द से जल्द स्वतंत्र होना चाहिए। वरना विदेशी हुकूमत का दमन सारी सीमाएं लांघ जाएगा। जहां कोई भी भारतीय जीने की कामना भी नहीं कर

पाएगा। इस बात की पुष्टि इस प्रकार होती है, असहयोग आन्दोलन के समय गिरफ्तारी के दौरान उन्होंने अपने पिता से कहा था कि, “मेरी शिक्षा इंतजार कर सकती है मगर भारत की स्वतंत्रता में तनिक भी देर नहीं होनी चाहिए।”¹⁸

सरकार की नीतियों में अविश्वास

क्रान्तिकारी यतीन्द्र दास ने बचपन से ही अपने जीवन को भारत माता की मुक्ति के लिए अर्पित कर दिया था। उनकी सरकार विरोधी गतिविधियों के चलते गिरफ्तार तो किया लेकिन सबूतों व गवाहों के अभाव के कारण यतीन्द्र दास पर कोई मुकदमा दायर नहीं किया जा सका। लेकिन सरकार उनको किसी भी कीमत पर छोड़ना नहीं चाहती थी। लिहाजा उनको 1818 अधिनियम के तहत नजरबन्द कर दिया गया था। यहां बताना आवश्यक होगा कि यह अधिनियम भी रौलेट एक्ट की भान्ति काला कानून माना जा सकता है। क्योंकि इसकी प्रवृत्ति भी कुछ ऐसी ही थी जो बंगाली क्रान्तिकारी आन्दोलन को कुचलने हेतु लाया गया था। क्योंकि यह अधिनियम ब्रिटिश सरकार की साम्राज्यवादी नीतियों का जीता जागता उदाहरण था। सरकार एक बात पर टिकी थी यदि कोई उनका विरोध करेगा उन्हें अनिश्चित समय तक जेलों की यातना सहनी पड़ेगी यतीन्द्र नाथ ऐसे ही एक क्रान्तिकारी थे जिनकी गैर कानूनी नजरबंदी के खिलाफ असेम्बली में जे.एन. सेन गुप्त ने कड़ी आवाज़ उठाई थी।¹⁹

इसी दौरान यतीन्द्र दास को एक अन्य स्थान पर स्थानान्तरित करके परेशान किया जाने लगा इसी को लेकर एक बड़े अधिकारी के साथ क्रान्तिकारी जतिन दास की झड़प हो गई क्योंकि अधिकारी ने उन्हें सलाम करने की बात की थी। लेकिन यतीन्द्र ने शेर की भान्ति अधिकारी को अपनी बाँहों में जकड़ लिया।²⁰ क्रान्तिकारियों का अन्य स्थानों पर स्थानान्तरण मनोबल को तोड़ने हेतु किया गया था। जिनमें यतीन्द्र दास, पन्ना लाल मुखर्जी का नाम भी शामिल था। लगभग 24 क्रान्तिकारियों को बंगाल से अन्य प्रान्तों में भेजा गया था।

स्थानान्तरित क्रान्तिकारियों के नाम

पंजाब

- किरण मुखर्जी
- यतिन्द्रनाथ दास (जतिन दास)
- सूरज सेन
- आशुतोष भट्टाचार्य

बाम्बे

- सतीश प्रकरासी

- आशुतोष काहिली
- पन्ना लाल मुखर्जी
- गणेश घोष

बिहार

- विश्वनाथ मुखर्जी
- धीरेन्द्र मुखर्जी

संयुक्त प्रान्त

- अमृत सरकार
- भूपति मजूमदार
- नतिन सूर
- कागेन चैटर्जी²¹

सरकार विभिन्न प्रान्तों में राजबन्दियों को इसलिए भेज रही थी ताकि वे सभी अपने-अपने राष्ट्रवादी दृष्टिकोण को त्याग कर सरकार कर विरोध करना बन्द कर दें। लेकिन अंग्रेजी सरकार का यह दांव उल्टा पड़ गया क्योंकि विभिन्न प्रान्तों की जेलों में क्रान्तिकारियों का सम्पूर्ण भारत के क्रान्तिकारियों से मेल मिलाप हुआ जिसके परिणामस्वरूप एक राष्ट्रव्यापी क्रान्तिकारी आन्दोलन उभर कर सामने आया। क्योंकि सभी क्रान्तिकारी साथियों ने क्षेत्रीयता के दृष्टिकोण को त्याग कर राष्ट्रीयता के दृष्टिकोण को अपनाया था।

यहाँ गौर करने की बात है कि काकोरी प्रकरण के पश्चात अन्य क्रान्तिकारियों के साथ सचिन्द्रनाथ सान्याल को पुलिस तलाश रही थी। क्योंकि उन्होंने ही अखिल भारतीय क्रान्तिकारी दल हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ बनाकर भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन को गुप्त रूप से कलकत्ता में परिवार सहित यतीन्द्र दास ने छिपने में मदद की थी। इस बात की पुष्टि सान्याल की पत्नी प्रतिभा सान्याल के शब्दों से होती है, "इन दिनों हम बड़ी मुश्किल से जीवन गुजार रहे थे। हमारे पास रुपयों की बड़ी कमी थी। इसके अतिरिक्त रहने को भी कोई मकान नहीं था। मगर ऐसे वक्त में भी यतीन्द्र दास ने हमारी मुश्किलों को दूर किया था। जिस कारण वह मेरे पति (सचिन्द्र) के साथ-साथ दल का अभिन्न सदस्य बन गया था। यतीन्द्र दास के द्वारा जिस मकान की व्यवस्था की गई थी वहीं से क्रान्तिकारी दल का संचालन होता रहा था।"²²

ध्यान देने पर नजर आता है यतीन्द्र दास ने यहां दूरदर्शिता का परिचय दिया था क्योंकि यदि सान्याल पुलिस की तलाशी के दौरान गिरफ्तार हो जाते तो क्रान्तिकारी आन्दोलन को आरंभ करने

के लिए जो राणनीतियाँ, आदर्श व उद्देश्य बनाए गए थे। वे सभी कार्य धरे के धरे रह जाते। जो उन्होंने गांधी को खुले पत्र में बताया भी था कि क्रान्तिकारी एक बार फिर भारत की स्वतंत्रता हेतु सक्रिय होंगे। वहीं दूसरी तरफ जतिन दास को 1927 में उनकी नजरबन्दी से स्वतंत्र करने से पूर्व सरकार का एक अधिकारी बात करने आया। ताकि क्रान्तिकारी यतीन्द्र दास के दृष्टिकोण को गहराई से जान सके कि क्यों वे अंग्रेजी सरकार का इतना विरोध कर रहे हैं? उनका दावा था कि सरकार के पास मेरे खिलाफ एक भी सबूत नहीं है। लेकिन फिर भी मुझे नजरबन्द करके रखा गया है।²³ आगे बताया गया कि उनकी तथा अन्य क्रान्तिकारी साथियों की नजरबन्दी सरकार विरोधी गतिविधियों के साथ-साथ राजनीतिक विचारों के कारण भी थी।²⁴

इस प्रकार अंग्रेजी सरकार का क्या रवैया था। इसको अच्छी तरह समझा जा सकता है कि यदि कोई विचारों से भी सरकार का विरोध करता तो उसे गिरफ्तार किया जा सकता था। इसके पश्चात उन को नजरबन्दी से रिहा कर दिया गया लेकिन उन्होंने फिर भी सरकार का प्रबल विरोध जारी रखा था। पुलिस व सरकार उनसे भय खाने लगी थी। उन्होंने अपनी लगन व राष्ट्रवादी भावना के चलते क्रान्तिकारी आन्दोलन को सशक्त बनाया था।²⁵

इसी दौरान भगत सिंह तथा अन्य क्रान्तिकारियों ने मिलकर हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातान्त्रिक दल का गठन किया जो नए तरीकों से क्रान्तिकारी गतिविधियों को चलाने का एक अखिल भारतीय स्तर का मंच बनाया गया था। भगत सिंह जब कलकत्ता में थे उसी दौरान यतीन्द्र दास से उनकी भेंट हुई थी। दोनों क्रान्तिकारियों ने बम निर्माण को लेकर चर्चा की और आगरा में बम निर्माण करने की बात स्वीकार कर ली।²⁶

यतीन्द्र दास तथा भगत सिंह का मानना था कि अब सरकार से सीधी टक्कर लेने का वक्त आ चुका है। दोनों सरकार से आर-पार की लड़ाई हेतु भारतीय जनता को तैयार करके उनको प्रशासन के खिलाफ करने में काफी हद तक सफल भी हो रहे थे। जिसका पहला उदाहरण यह था कि लाला जी की मौत का बदला साण्डर्स हत्याकाण्ड से भगत सिंह तथा अन्य क्रान्तिकारियों ने ले लिया था।²⁷

इसका दूसरा उदाहरण 8 अप्रैल, 1929 को असेम्बली बम प्रकरण जिसके कारण अंग्रेजी प्रशासन की जड़ें हिल चुकी थी। भगत सिंह व बी.के. दत्त ने भरी असेम्बली में बम धमाकों द्वारा क्रान्तिकारी आन्दोलन के लक्ष्य, आदर्शों व दृष्टिकोण को सरकार व जनता तक पहुँचाया गया था। इस वक्तव्य में क्रान्तिकारी यतीन्द्र दास व भगत सिंह के सरकार के प्रति दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। असेम्बली बम काण्ड पर सेशन कोर्ट में भगत सिंह ने जो लिखित बयान, 6 जून, 1929 को दिल्ली के जज मि. मिडल्टन की अदालत में किया था वो इस प्रकार था -

हमारे ऊपर गंभीर आरोप लगाये गये हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम भी अपनी सफाई में कुछ शब्द कहें। हमारे कथित अपराध से सम्बन्धित निम्नलिखित प्रश्न उठते हैं:-

1. क्या वास्तव में असेम्बली में बम फेंके थे, यदि हाँ तो क्यों?
2. नीचे की अदालत में हमारे ऊपर जो आरोप लगाये हैं, वे सही हैं या गलत?

पहले प्रश्न के पहले भाग के लिए हमारा उत्तर स्वीकारात्मक है, लेकिन तथाकथित चश्मदीद गवाहों ने इस मामले में जो गवाही दी थी। वह सरासर झूठ थी। चूंकि हम बम फेंकने से इन्कार नहीं कर रहे इसलिए यहाँ उन गवाहों के बयानों की सच्चाई की परख भी हो जानी चाहिए थी। उदाहरण के लिए हम यहाँ बतला देना चाहते हैं कि सारजेंट टेरी का कहना कि हमसे एक के पास से पिस्तौल बरामद की वह एक सफेद झूठ मात्र है, साथ-साथ बम फेंकने की बात कही कि उन्होंने हमें बम फेंकते देखा था, वे झूठ बोलते हैं। साथ ही हम सरकारी वकील के उचित व्यवहार तथा अदालत के अभी तक के न्याय संगत रवैये को भी स्वीकार करते हैं।

पहले प्रश्न के दूसरे भाग का उत्तर देने के लिए उन्होंने कहा कि हमें इस बमकाण्ड जैसी ऐतिहासिक घटना के कुछ विस्तार में जाना पड़ेगा। हमने वह काम किस अभिप्राय से तथा किन परिस्थितियों के बीच किया था, इसकी पूरी एवं खुली सफाई आवश्यक थी। उन्होंने आगे बताया कि उन्हें किसी से व्यक्तिगत द्वेष नहीं और हम प्राणी मात्र को हमेशा आदर की निगाह से देखते आये थे। हम न तो बर्बरतापूर्ण उपद्रव्य करने वालों में से थे जैसा कि सोशलिस्ट कहलाने वाले दीवान चमनलाल ने कहा था और न ही हम पागल हैं जैसा कि लाहौर के ट्रिब्यून तथा अन्य समाचार-पत्रों ने सिद्ध करने का प्रयास किया था। हमने यह काम किसी व्यक्तिगत द्वेष की भावना से नहीं वरन् हमारा उद्देश्य केवल अयोग्य शासन व्यवस्था के खिलाफ था। जनता के प्रतिनिधियों ने कितनी ही बार राष्ट्रीय मांगों को सरकार के सामने रखा, परन्तु उन्होंने हर बार उन मांगों को रद्दी की टोकरी में डाल देते थे।

गर्वनर जनरल की कार्यकारिणी समिति के भूतपूर्व सदस्य एस. आर. दास ने अपने प्रसिद्ध पत्र में अपने पुत्र को लिखा था कि इंग्लैण्ड की स्वप्न निद्रा भंग करने के लिए बम का उपयोग आवश्यक था। दास के इन्हीं शब्दों को सामने रखकर हमने असेम्बली भवन में बम फेंके थे। हमने वह काम मजदूरों की तरफ से प्रतिरोध प्रदर्शित करने के लिए किया था। उन असहाय मजदूरों के पास अपने दुःखों को प्रकट करने का कोई साधन नहीं था। हमारा एकमात्र उद्देश्य बहरों को सुनाना और उन पीड़ितों की मांगों पर ध्यान न देने वाली सरकार को समय रहते चेतावनी देना था।

हमारा अभिप्राय यह था कि इस घटना के सिलसिले में चोटें व्यक्तियों अथवा असेम्बली के किसी अन्य व्यक्ति के प्रति हमारे दिलों में कोई व्यक्तिगत द्वेष की भावना नहीं थी। हम साम्राज्यवादी की सेना के भाड़े के सैनिकों जैसे जिनका काम ही नर हत्या करना था। इसके बाद भी हम स्वीकार करते हैं कि हमने जानबूझकर असेम्बली में बम फेंके थे। हमारे इरादों की परख हमारे काम के परिणाम के आधार पर होनी चाहिए न कि अटकल एवं मनगढ़ंत परिस्थितियों के आधार पर।

भगत सिंह से नीचे की अदालत में पूछा गया था कि क्रान्ति से तुम्हारा क्या मतलब था? इसके जवाब में उन्होंने कहा था कि क्रान्ति के लिए खूनी लड़ाईयाँ अनिवार्य नहीं और न ही इसमें हिंसा के लिए स्थान होता है। क्रान्ति से हमारा अभिप्राय है अन्याय पर आधारित मौजूदा समाज व्यवस्था में आमूल परिवर्तन।

भगत सिंह व दत्त ने अपने बयान में समाज में व्याप्त असमानता की बात भी की थी। उनका कहना था कि मजदूरों, किसानों को अधिकारों से वंचित रखा जाता है। इस व्यवस्था से दुनियां उथल-पुथल की ओर जा रही है। लेकिन अगर हमारी इस चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया गया तो वर्तमान शासन-व्यवस्था के विरुद्ध क्रान्ति मानव जाति का जन्मजात अधिकार है जिसका अपहरण नहीं किया जा सकता। स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। वे क्रान्ति के आगमन की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे।

इंकलाब जिन्दाबाद, साम्राज्यवाद का नाश हो ।

इसके पश्चात 12 जून, 1929 को दोनों क्रान्तिकारियों को आजीवन कारावास सुनाया गया।²⁸ लेकिन यतीन्द्र दास अभी तक पुलिस को चकमा देने में कामयाब हो रहे थे। मगर क्रान्तिकारी साथी फणीन्द्र घोष की मुखबिरी के कारण गिरफ्तार करके लाहौर लाया गया। इस प्रकार व्यापक स्तर पर क्रान्तिकारी साथियों को पकड़ लिया गया था। जिनमें भगत सिंह, सुखदेव, शिव वर्मा व यतीन्द्र दास भी थे।²⁹

यहां बताना जरूरी है कि 10 जुलाई, 1929 को अदालत में यतीन्द्र दास ने अपने साथ हुई बदसलूकी के बारे में बताना चाहा कि उन्हें छः कुलियों के साथ खड़ा कर दिया गया था। उनके बीच किसी बंगाली युवक को पहचानन कोई कठिन काम नहीं था। उन्होंने आगे कहा कि उनकी शिनाख्त बंगाली युवकों के बीच खड़ा कर की जाए। लेकिन उनकी बात नहीं मानी गई। उनकी दूसरी शिकायत यह थी कि राजनीतिक बन्दियों को हथकड़ी नहीं लगाई जानी चाहिए। लेकिन इन सभी बातों पर जज ने कहा कि, "पंजाब पुलिस का यही दस्तूर है।"³⁰ सरकार को चाहे जो भी तरीका अपनाना पड़ता वो क्रान्तिकारी यतीन्द्र व साथियों के अंदर से राष्ट्रवादी भावना को समाप्त करने के लिए किसी भी हद तक जा सकती थी खुद के बनाये कानूनों को तोड़ना तो एक बेहद छोटी बात थी ।

ऐतिहासिक भूख हड़ताल व बलिदान

लाहौर की अदालत में हुई यह घटना यतीन्द्र दास के मन में इस तरह बैठ गई थी कि उन्होंने जेल से ही विरोध करने का प्रण ले लिया था। इसी दौरान सभी राजनीतिक बन्दियों की सारी सुविधाएं छीन ली गई। उनके साथ अपराधियों के समान बर्ताव किया जाने लगा था। क्रान्तिकारी भला इन ज्यादातियों को कैसे सहन कर सकते थे। जेल के अन्दर ही नए ढंग से सामान्यवादी विरोध का

तरीका अपनाया गया।³¹ जो क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास में एक नया अध्याय माना जाता है।

यहां बताना आवश्यक है कि यतीन्द्र दास को छोड़कर अन्य किसी क्रान्तिकारी को अनशन का पहले अनुभव नहीं था। इसलिए उन्होंने कहा भावना में बहकर भूख हड़ताल में शामिल न होने की बात की थी। क्योंकि यतीन्द्र दास सरकार की मंशा को भली भान्ति जानते थे जो भूख हड़ताल को किसी भी तरह से सफल नहीं होने देना चाहती थी। यतीन्द्र दास ने कहा था कि अन्यन का मार्ग कहीं अधिक कठिन है। इंच-इंच करके मौत की तरफ जाने का रास्ता है। एक बार मैदान में उतर कर पीठ नहीं दिखाई जा सकती थी।³²

क्रान्तिकारियों की हड़ताल से जेल के अन्दर और बाहर दोनों तरफ राष्ट्रवादी भावना का तीव्रता से प्रसार होना आरंभ हो गया। इसी बीच अन्य क्रान्तिकारियों के साथ यतीन्द्र दास की भी हालत खराब होने से फेफड़ों में तकलीफ होने लगी।³³

यतीन्द्र सरकार की नीतियों से भली भान्ति परिचित थे कि वे अमानवीयता की सारी हदें पार कर देगी। उनको पता चल गया था कि वह ज्यादा दिन तक सरकार की नीतियों विरोध नहीं कर सकेंगे। लिहाजा उन्होंने बड़ी धीमी आवाज़ में जितेन्द्र सान्याल से कहा, "अब मैं सरकार की पकड़ में नहीं आऊंगा।"³⁴ उनका लगातार बिगड़ता स्वास्थ्य सभी के लिए चिन्ता का विषय बना हुआ था। उन्हें सबसे गंभीर रोगी की सूची में शामिल किया गया था।³⁵

इसी दौरान अंग्रेजों ने यतीन्द्र दास को रिहा करने की बात की ताकि उनकी मंशा को कोई जान ना पाए। इसीलिए सरकार पर सन्देह होना लाजमी था। उनका विचार था कि सरकार जान चुकी है मैं अब बच नहीं सकता। लिहाजा वह मेरी मृत्यु का उत्तरदायित्व अपने ऊपर नहीं लेना चाहती। लेकिन मेरी यही इच्छा है कि मैं अपने प्राण तुम्हारे (क्रान्तिकारी साथी) बीच ही त्यागना चाहता हूँ। इसीलिए मेरी इस रिहाई का प्रबल विरोध किया जाये।³⁶

यतीन्द्र दास यदि चाहते तो सरकार की बात स्वीकार करके जमानत पर रिहाई ले सकते थे। मगर उन्होंने पहले ही तय कर रखा था। मेरे अनशन का अर्थ ही है - जीत अथवा मौत। यतीन्द्र दास ने पहले ही बता रखा था कि जब उनका आखिरी पल हो तो रविन्द्रनाथ ठाकुर का एकला चलो रे गीत गाया जाए। किरण दास तथा विजय सिन्हा ने गीत गाया। एक अपने भाई को तथा दूसरा अपने साथी को अन्तिम विदाई दे रहा था।

एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे।³⁷

यतीन्द्र दास ने जेल अधिकारियों से अपनी अन्तिम इच्छा प्रस्तुत करते हुए कहा कि उनका पार्थिव शरीर उनके अनुज किरण दास को सौंप दिया जाये ताकि उनका अन्तिम संस्कार कलकत्ता में किया जा सके। जतिन के साथियों के सुझाव पर किरण दास ने लाहौर रेल अधिकारी से बात की ताकि

यतीन्द्र दास के पार्थिव शरीर को लाहौर से कलकत्ता रेल मार्ग से ले जाने का बन्दोबस्त किया जाए। यहाँ बताना आवश्यक होगा यतीन्द्र चाहते थे कि दिल्ली, जो भारत की राजधानी थी, की जनता अपनी आँखों से देख सके कि किस तरह ब्रिटीश सरकार की बर्बरता से भारत माता ने अपना एक सुपुत्र खो दिया। इसके अतिरिक्त उनकी अन्तिम यात्रा सरकार के लिए भी अन्तिम प्रहार साबित हो सके। जब बंगाल में पुलिस अधिकारियों को सूचना मिली कि सरकार यतीन्द्र का पार्थिव शरीर किरण को सौंपने वाली थी तो उनके हाथ-पाँव फूल गए। उनका विचार था कि लाहौर में ही अन्तिम संस्कार करके राख को कलकत्ता लाया जाए क्योंकि यदि मृतक देह को लाहौर से कलकत्ता लाया गया तो स्थिति बेकाबू हो सकती थी। इसके लिए रेल विभाग पर दबाव डाला गया किन्तु वह नहीं माने। उनका मत था कि उसे अपने काम को व्यापारिक तरीके से चलाना है यदि यतीन्द्र दास की मृतक देह को ले जाने हेतु वाजिब किराया दिया जाए तो उन्हें इन्कार करने का सवाल ही नहीं बनता।³⁸

इसी दौरान 13 सितम्बर, 1929 को भूख हड़ताल के तिसठवें दिन यतीन्द्र दास लाहौर की बोस्ट्रल जेल में शहीद हो गये।³⁹ उनकी अन्तिम इच्छा की पूर्ति हेतु उनका अन्तिम संस्कार कलकत्ता में ही किया गया। जहाँ से भी क्रान्तिकारी यतीन्द्र दास की रेल यात्रा होकर गुजरी वहाँ लाखों की संख्या में लोगों ने अपनी विनम्र श्रद्धांजलि दी। उनका बलिदान ब्रिटिश साम्राज्यवाद की नीतियों के शोषण का संजीव उदाहरण था जिसका साक्षी भारत के साथ साथ समूचा विश्व बना था।

यतीन्द्र के अन्तिम संस्कार के अवसर पर कलकत्ता में दो मील लम्बा जुलूस निकाला गया जिसमें अनुमानित छः से सात लाख लोगों ने भाग लिया था। जनप्रियता का इससे बड़ा क्या प्रमाण हो सकता था। यतीन्द्र के शब्द आज सच हो रहे थे जेल में उन्होंने कहा था, "मैं केवल कलकत्ता का नहीं अपितु पूरे भारत का हूँ।"

लोगों का इतना बड़ा जुलूस अंग्रेजी सरकार की बुनियाद हिला देने के लिए काफी था। जो श्रद्धा लोगों के दिलों में गहराई से समाई हुई थी आज तक एक सैलाब की भान्ति निकल कर बाहर जा रही थी। यतीन्द्र दास के अनशन के दौरान हुए बलिदान के परिणामस्वरूप सरकार को विज्ञप्ति जारी करनी पड़ी थी जिस में राजनैतिक बन्धियों को ए और बी श्रेणी में रखा गया था। किन्तु साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ाई में जो शामिल थे इस विज्ञप्ति में उनको लाभ नहीं हुआ था। मन्मथनाथ गुप्त ने इस विज्ञप्ति का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि, "हमारे नेताओं ने एक स्वर से इस विज्ञप्ति का समर्थन किया। बात यह है कि कुछ बड़े नेताओं के अतिरिक्त जिनको सरकार अपने विशेष अधिकार से अच्छा व्यवहार करती थी इस विज्ञप्ति से छोटे नेताओं को भी आशा बन कि उनका जेल कष्ट दूर हो गया। उन्होंने अनशन करने वालों को तार दिया कि यह विज्ञप्ति कबूल करने लायक है।"⁴⁰

इसके अतिरिक्त रामधारी सिंह दिनकर ने भारत माता के वीर सपूत के बलिदान पर **बागी** शीर्षक के तहत एक कविता रची जो राष्ट्रीय आन्दोलन को गति प्रदान करने वाली सिद्ध हुई थी।

निर्मम नाता तोड़ जगत का अमरपुरी की ओर चले,
बन्धन मुक्ति न हुई, जननि की गोद मधुरतम छोड़ चले।
जलता नन्दनवन पुकारता, मधुप, कहाँ मुँह मोड़ चले,
बिलख रही यमुना, माधव, क्यों मुरली मुंज मरोड़ चले,
उबल रहे सब सखा, नाय की उद्यत एक हिलोर चले,
पछताते हैं वधिक, पाप का घड़ा हमारा फोड़ चले।
माँ रोती, बहने कहराती, घर-घर व्याकुलता जागी,
उपल सरीखे पिघल-पिघल, तुम किधर चले मेरे बागी।

इसके अतिरिक्त क्रान्तिकारी मनमथनाथ गुप्त ने एक पुस्तक लिखी जो क्रान्तिकारियों के दृष्टिकोण, विचारों को जनता तक पहुंचाने में कारगर सिद्ध हो रही थी। साथ ही यतीन्द्र की वीरगति के पश्चात जो गति क्रान्तिकारी आन्दोलन में आई वह भी साफ लिखा था

उपरोक्त विवरण के आधार पर बताया जा सकता है कि यतीन्द्र दास बचपन से ही अंग्रेजी साम्राज्य से भारत माता को आजाद करवाने के लिए अपना ध्येय बना चुके थे। उन्होंने एकला चलो रे गीत को सार्थक बनाते हुए भारत और विश्व के सामने साम्राज्यवाद को समाप्त करने हेतु क्रान्तिकारी आन्दोलन को चुना था। वहीं दूसरी बात यतीन्द्र ही एकमात्र क्रान्तिकारी थे जो बम बनाने में निपुण थे। जिसके द्वारा अपनी मांगों के लिए धमाकों के जरिए अंग्रेजी सरकार को गहरी नीन्द से जगाया जा सका था। वे अंग्रेजी सरकार की चालों से भली भान्ति परिचित थे क्योंकि इतने कम समय में उन्होंने सरकार का असली चेहरा पहचान लिया था। इसीलिए वे किसी भी लोभ में नहीं आ सके। यतीन्द्र की दृढ़ इच्छाशक्ति किसी फौलादी ढांचे की भान्ति थी वे अपना सर्वस्व देकर भी भारत माता की स्वतंत्रता चाह रहे थे। क्रान्तिकारी मनमथनाथ गुप्त ने लिखा था कि, "शहीदों का मरना खासकर यतीन्द्र दास का मरना ऐसा था जैसे धुआँ खत्म हो गया हो। रह गई हो केवल एक दीप्ती जो हमारे सामूहिक जीवन को उज्ज्वल बनाती है।"⁴¹

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सत्यम एम. राय, भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1983, पृ.3
2. रवि शेखर सिंह, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की भूमिका, 1924-37, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2017, पृ.179

3. सत्यम एम. राय, भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, पृ.345
4. सत्यम एम. राय, भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, पृ.346
5. गिरिजा शंकर चौधरी, अरविन्दो बांग्लार स्वदेशी युग, नवभारत प्रकाशन, कलकत्ता, 1956, पृ.36
6. किरण चन्द्र दास, अमर शहीद जतिन दास, हरियाणा लोक प्रकाशन विभाग, चण्डीगढ़, पृ.16
7. एम.एम. जुनेजा, मृत्युविजयी यतीन्द्र नाथ दास, मोर्डन प्रकाशन, मोहाली, 2013, पृ.28
8. इण्डियन एनुअल रजिस्टर, 1919, भारत सरकार।
9. एम.एम. जुनेजा, मृत्युविजयी यतीन्द्र नाथ दास, पृ.28
10. पट्टाभि सीतारमैया, कांग्रेस का इतिहास, भाग-2, सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली, 1986, पृ.156
11. विपिन चन्द्र, नेशनलिज्म और कोलोनियलिज्म इन मोर्डन इण्डिया, ओरियण्ट लॉंगमैन लि., दिल्ली, 1479, पृ.224
12. सुमित सरकार, आधुनिक भारत (1885-1947), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ.271
13. किरण चन्द्र दास, अमर शहीद जतिन दास, पृ.23
14. शिव वर्मा, संस्मृतियाँ, राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ, 2020, पृ.135
15. रवि शंकर सिंह, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएसन की भूमिका, 1924-1937, पृ.259-67
16. रवि शंकर सिंह, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएसन की भूमिका, 1924-1937, पृ.259-67
17. पी.एस. ओगर्थी, ए शोर्ट मेमोयर ऑफ टैरेन्स मैक्स्वनी, लन्दन, 1922, पृ.95
18. मन्मथनाथ गुप्त, क्रान्तिकारियों का वैचारिक इतिहास, निधि प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980, पृ.135
19. सी.एस. वेणु, जतिन दासः द मार्टियर, एस चन्नियां प्रकाशन, मद्रास, 1973, पृ.20
20. एम.एम. जुनेजा, मृत्युविजयी यतीन्द्र नाथ दास, पृ.31

21. फाईल संख्या 1, 1924, गृह विभाग, राजनीति, भारत सरकार
22. किरण चन्द्र दास, अमर शहीद जतिन दास, पृ.18
23. फारवर्ड, समाचार पत्र, 1 जून, 1927
24. फारवर्ड, समाचार पत्र, 1 जून, 1927
25. सुधीर विद्यार्थी, शहादतनामा, नई किताब प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ.116
26. लाहौर षड्यंत्र केस प्रोसिडिंग्स, फाईल संख्या 754, 1929, वोल्यूम-4, भारत सरकार
27. लाहौर षड्यंत्र केस प्रोसिडिंग्स, फाईल संख्या 754, 1929, वोल्यूम-4, भारत सरकार
28. असेम्बली बम केस पेपर्स, फाईल संख्या 306, गृह विभाग, राजनीति, भारत सरकार।
29. मन्मथनाथ गुप्त, भगत सिंह और उनका युग, लिपि प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृ.201
30. सुधीर विद्यार्थी, शहादतनामा, पृ.119
31. सुधीर विद्यार्थी, शहादतनामा, पृ.119
32. मन्मथनाथ गुप्त, क्रान्तिकारियों का वैचारिक इतिहास, पृ.141
33. मन्मथनाथ गुप्त, क्रान्तिकारियों का वैचारिक इतिहास, पृ.141
34. शिव वर्मा, संस्मृतियाँ, पृ.142
35. फाईल संख्या 242, 1929, गृह विभाग, राजनीति, भारत सरकार।
36. शिव वर्मा, संस्मृतियाँ, पृ.143
37. सुधीर विद्यार्थी, शहादतनामा, पृ.134
38. किरण चन्द्र दास, अमर शहीद जतिन दास, पृ.62
39. फाईल संख्या-21/63, 1929, गृह विभाग, राजनीति, भारत सरकार, मनमथनाथ गुप्त, भारत के क्रान्तिकारी, पूर्वोक्त, पृ.149
40. रवि शेखर सिंह, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की भूमिका, 1924-37, पृ.167
41. मन्मथनाथ गुप्त, क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक इतिहास, पृ.250